अपनी - अपनी खुशबू

विजयदान देथा

पानी के सहारे मछलियां जीती हैं और मछलियों के सहारे मछुए। मीठे पानी की झील के किनारे एक मछुए की झोंपड़ी थी। झोंपड़ी के सामने लिपे हुए आंगन में तरह-तरह की मछलियां। चौतरफा हवा में मिचली-मिचली दुर्गन्ध होते हुए भी उस घरवाले उस बदबू के आदी हो चुके थे। मछलियों की मिचलाहट के लिए उनकी नाक की ग्रन्थियां मर चुकी थीं।

टोकरी में ताजी मछलियां लेकर मछुवन पास के नगर में बेचने के लिए जाती थी। एक दफा चौमासे में मछलियों की टोकरी सर पर उठाकर जब मछुवन चलने लगी तब मछुए ने उसे सतर्क करते हुए कहा, 'आज बरखा की रंगत बड़ी बेढब लग रही है। वापस जल्दी आना। मुझे नदी आने का अन्देशा है।'

दूध से जला छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है- कुछ ऐसी ही अतिरिक्त सावचेती मछुए की हिदायत में थी। पिछले साल पहली घरवाली इसी नदी में डूबकर मर गयी थी। घुटनों तक पानी के भरोसे अन्दर उतर गयी सो मंझदार में तीव्र वेग के थपेड़ों से पैरों की जमीन छूट गयी। खूब हाथ-पांव मारे पर कोई बस नहीं चला।

मछुओं को हवा, उमस और बरखा की जबरदस्त पहचान होती है। नदी पार कर नगर में घुसते ही पानी बरसने लगा। मछुवन के मन में बेहद हड़बड़ी मची। भीगते-भीगते सारी मछलियां जैसे-तैसे बेच डालीं। वापस बेतहाशा भागती हुई नदी के किनारे आयी, पर नदी विकट रूप से बह रही थी। देखने मात्र से ही डर लगे, ऐसा उत्कट वेग! पहाड़ की ढलान से पछाड़ खाता पानी नदी के बीच आते ही मचलने लगता था।

पति की बात का ख्याल आते ही मछुवन फौरन वापस मुड़ गयी। अब जाये तो कहां जाये! अनजानी बस्ती! कहां रात गुजारे! संयोग की बात कि थोड़ी दूर जाने पर सामने से एक मालन आती दिखायी दी। पास में राजा का सुन्दर बगीचा था। घर का काम-काज निबटाकर वह बीगचे की निगरानी के लिए जा रही थी। कई मर्तबा दोनों का राह में आमना-सामना होता था, पर फक्त दुआ-सलाम करके आगे बढ़ जातीं। काम की जल्दी धन्धे की हड़बड़ी।

मछुवन के रंग-ढंग देखते ही मालन बिना कहे उसकी परेशानी का कारण समझ गयी। बोली, 'नदी आ गयी तो क्या हुआ! चल मेरे साथ। बहुत जगह है।'

मछुवन उसका एहसान मानते हुए तुरन्त उसके साथ चल पड़ी।

बरखा काफी धीमी हो गयी थी। थोड़ी दूर चलने के उपरान्त मालन ने मछुवन को बुरी तरह भीगे हुए देखा तो कहने लगी, 'ठण्ड लग रही हो तो मेरी बरसाती ले ले।'

मछुवन मुस्कराते हुए बोली, 'हमें भी मछलियों की तरह पानी से ठण्ड नहीं लगती। हम तो बरखा और पानी के आदी हैं।'

घरेलू बातें करती हुई दोनों बगीचे के नज़दीक पहुंची...। अचानक तीन-चार दफ़ा ज़ोर से सांस खींचकर मछुवन ने पूछा, 'यह कैसी गन्ध आ रही है?'

मालन ने सरल भाव से जवाब दिया, 'बगीचे की।'

मालन मोद-भरे सुर में राजा के बगीचे की प्रशंसा करते कहने लगी, 'इसमें अचरज की क्या बात है? ऐसा शानदार बगीचा तो सौ-सौ कोस में भी नहीं मिलेगा। आस-पास के सभी रजवाड़े आये-दिन मेरे बगीचे की कलमें और दावें मंगाते हैं। चमेली की, मोगरे की, केवड़े की, चम्पा की, गुलाब की...!'

मछुवन ने नाक भींचकर बीच ही में पूछा, 'तू रात को यही सोती है?'

भांति-भांति के फूलों की खुशबू के गुमान में खोयी मालन ने तुरन्त जवाब दिया, 'और कहां सोऊंगी? इस बगीचे के अलावा मुझे दूसरी जगह नींद ही नहीं आती। यहां की तो मिट्टी में भी खुशबू घुली हुई है। तेरी इच्छा हो तो तू भी पांच-पचीस पौधे ले जाना। फूल देखने पर मेरी याद तो आयेगी।'

सांस रोकते हुए मछुवन ने बड़ी कठिनाई से मुंह खोला, 'फूलों के बिना क्या याद नहीं आयेगी?'

बरखा बिल्कुल थम गयी थी। बरसाती उतारते हुए मालन उदारता से बोली, 'तुझसे फूल दूर थोड़े ही हैं! इतना दुराव-संकोच भी किस काम का!'

बगीचे के फाटक को खोलते मालन आगे कहने लगी, 'मुझे राजाजी की पूरी छूट है। तुझे फूलों की टोकरी भरकर दूं तब भी मुझे उलाहना नहीं देंगे।

बगीचे के भीतर पैर रखते ही मछुवन का सर फटने लगा। नाक और मुंह पर ओढ़नी का पल्लू रखते हुए धीरे-से बोली, 'पर अपन उलाहने जैसा काम ही क्यूं करें? मैं फूलों का क्या करूंगी?'

मालन आश्चर्य प्रकट करते कहने लगी, 'क्या करेगी? तुझे अभी मेरे फूलों का अन्दाज़ा नहीं है। बड़े-बड़े राव-उमराव इस बगीचे के एक फूल की ख़ातिर तरसते हैं! एक दफा हाथ में लेने से तीन दिन तक खुशबू नहीं छूटती।'

मछुवन का जी बुरी तरह मिचलाने लगा। इस बदबू में मालन कैसे सांस लेती है? मछुवन को तो यहां नींद आनी ही मुश्किल है। उसके नथुने तो मानो झुलस गये हों। ऐसा बदबूदार बगीचा राजाजी के किस काम का? मछुवन के मन में इस

तरह के कई बुलबुले उठे, पर प्रफुल्लित मालन से कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं हुई।

कोठरी का दरवाजा खोलकर मालन ने मछुवन के भीगे कपड़ों पर हाथ फेरा और बोली, 'तू अन्दर बैठ। मैं अभी पास की कोठरी से तेरे लिए दूसरे कपड़े लेकर आती हूं।'

मछुवन के बार-बार मना करने के बावजूद वह नहीं मानी। कोठरी में घुसने पर थोड़ी-बहुत मिचलाहट कम हुई। गर्व से फूली हुई मालन कपड़ों के साथ फूल भी ले आयी। मछुवन के सामने फूल करते ही उसका जी बुरी तरह मिचलाने लगा। कै होते-होते बची।

अचानक मालन ने दो-तीन मर्तबा ज़ोर-ज़ोर से सांस लेते हुए पूछा, 'यह क्या गन्धा रहा है? इस कोठरी में ऐसी मिचलाहट तो कभी नहीं आयी?'

इधर-उधर टोह लेती हुई मालन की नजर कोने में रखी टोकरी पर अटकी। वो तुरन्त चिल्लाहट का कारण समझ गयी। झुंझलाहट दरसाते बोली, 'यह खाली टोकरी भीतर क्यूं ले आयी? मछलियों की दुर्गन्ध से मेरा तो सर फटा जा रहा है!'

मछुवन क्या जवाब देती? उसकी दुविधा ताड़कर मालन ने खुद अपने हाथों टोकरी उठाकर बाहर रख दी। हाथ को सूंघा तो वैसी ही मिचलाहट! रेत से रगड़-रगड़कर उसने दो-तीन दफ़ा हाथ धोये।

ब्यालू करने के लिए मछुवन बड़ी मुश्किल से मानी। अगर कै हो गयी तो कितना भद्दा लगेगा। ब्यालू से निवृत्त होकर मालन जब पास की कोठरी में सोने गयी तब कहीं मछुवन की जान में जान आयी। नहीं तो सारी रात जगना पड़ता।

उधर मछुवन से दूर होने पर मालन ने खैर मनायी। मछुवन के शरीर से कितनी बुरी मिचलाहट आ रही थी, पर लिहाज़ के कारण कुछ कहा नहीं। उधर मछुवन ने भी मालन का कम लिहाज नहीं रखा था। घड़ी डेढ़ घड़ी तक तो जैसे-तैसे कोठरी में करवटें बदलती रही, पर आखिर धीरे-धीरे पंजों के बल बाहर निकली। अपनी टोकरी लेकर वापस आयी। मुंह पर मछलियों की खाली टोकरी रखते ही उसका जी हल्का हो गया। अब तो वह मरकर भी किसी बगीचे में रतवासे के लिए तैयार नहीं होगी। आज फंसी, वह बहुत है। थोड़ी देर बाद टोकरी की भीनी खुशबू के फलस्वरूप वो खर्राटे भरने लगी। □

हादसों का हजूम

हादसों के हजूम में से दोस्तो, सबसे पहले मैं आपको एक निहायत मासूम हादसे की बात सुनाती हूं। मामूली और मासूम।

पर चिन्हात्मक-गुनाहे अव्वल औरत होना।

दोम-अकेली, सोम-अकेली और अपनी रोटी खुद कमाती है।

गुनाहे अज़ीम-तरीन अपनी रोटी खुद कमाती, ज़हीन, खुद्दार अकेली।